प्रस्तावना

सांप्रदायिकता और विभाजन का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है। सांप्रदायिकता और विभाजन की ऐतिहासिक जड़ों की गहराई से खोज-बीन के उपरांत ज्ञात होता है कि सांप्रदायिक नेताओं ने अपनी सांप्रदायिक विचारधारा के अनुरूप भारत को एक लोकतांत्रिक देश बनने से पूर्व किस तरह देश को टुकड़ों में बाँट दिया था। भारत विभाजन सिर्फ देश को दो टुकड़ों में बाँटने की ही घटना नहीं थी बल्कि मानवीय इतिहास में इससे बड़ा मानवीय हादसा और कोई दूसरा नहीं है । आज भी जिसे संपूर्ण दुनिया में एक वीभत्स घटना के रूप में देखा जाता है। सांप्रदायिकता का आधार धार्मिक कट्टरता और सांप्रदायिक विचारधारा है, जो अंग्रेजों व स्वार्थी नेताओं द्वारा बनाई गई 'फूट डालो और शासन करो' की नीति को आम जनता पर जबरन थोपने का धूर्ततापूर्ण कार्य है। जिसका उद्देश्य समानता पर आधारित न होकर विषमता पर आधारित है। ये निहायत कुटिल-कपटी और सामाजिक समानता के विपरीत एक तरह से वैमनष्यता पर आधारित कार्य है। खेद की बात यह है कि देश विभाजन का निर्णय नेताओं ने लिया तब सामान्य जनता उस से अनभिज्ञ थी, जिसका दूरगामी गंभीर परिणाम उन मासूम आम जनता के जीवन पर होता है और जिसका खामियाजा आम गरीब मासूम हिन्दू-मुस्लिम जनता को अपनी जान देकर भुगतना पड़ता है। अगर वे सांप्रदायिक नेता आम जनता का सच्चा प्रतिनिधि होते तो इस तरह के सांप्रदायिक फैसले नहीं लेते जिनसे लाखों लोगों को जान दे कर उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। अधिकांश बड़े राजनीतिक–सांप्रदायिक नेता सांप्रदायिक-वैमनष्यता फ़ैलाने का कार्य करते हैं। इस तरह सांप्रदायिक दंगा फ़ैलाने में इन कुटिल बुद्धिजीवियों की अहम् भूमिका होती है, क्योंकि ये अवसरवादी नेता आम ग़रीब जनता में सांप्रदायिक वैमनष्यता फैला कर हिंदू-मुस्लिम और अन्य धार्मिक, सांस्कृतिक, विषमताओं में बाँट कर अपनी अवसरवादिता को सफल करते हैं। जिसे समय रहते आम जनता को इनकी कुटिलता को समझना बहुत जरुरी है। हिंदुस्तान का विभाजन सिर्फ जमीन का दो टुकड़ों में बँट जाना नहीं है बल्कि सदियों से मिलजुल कर रह रहे हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, इसाई परिवार के आपसी सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों पर राजनीति से प्रेरित सांप्रदायिक प्रहार है। जिससे सदियों से चली आ रही सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों पर आघात हुआ है और लगातार हो रहा है। आये दिन हम समाचार पत्रों और अन्य संचार माध्यमों के द्वारा दंगों की ख़बर देखते और सुनते हैं। बहुत कम दंगे बिना राजनीति से प्रेरित होते हैं। अधिकांश दंगे, राजनीतिक दलों के सांप्रदायिक नेताओं के द्वारा बहुत ही सुनियोजित तरीके से करवाये जाते हैं। भारत के इतिहास में जब भी कभी व्यक्तिगत या सांप्रदाय विशेष के लाभ के लिए लोगों की

भावना को भड़काया गया है, वहाँ दंगे हुए हैं। इन दंगों में कभी किसी नेता या बड़े लोगों की जानें नहीं जाती है। जान जाती है सिर्फ मासूम आम गरीब जनता की। जिसमें हिंदू-मुस्लिम सिख, इसाई, बौद्ध आदि सब शामिल होते हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध विषय **'तमस: सामाजिक विसंगति और संघर्ष के आख्यान के विविध रूप'** को तीन अध्याय में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय **'तमस की कथावस्तु और भारत-विभाजन की स्थिति'** में कथावस्तु और भारत विभाजन की भयावह स्थितियों से अवगत कराया गया है। 'तमस' में उठाये गये मूल प्रश्न पर काफ़ी गंभीर चर्चा की गई है। उपन्यास में वे पात्र जो समाज में हो रही सांप्रदायिकता को फ़ैलाने में सहयोग कर रहे हैं और वे पात्र जो फैलाई गई सांप्रदायिकता के शिकार हुए हैं। विभाजन पूर्व हुए सामाजिक उथल-पुथल की चर्चा की गई है एवं विभाजन के कारण को दिखलाया गया है।

द्वितीय अध्याय **'तमस का संघर्ष और उपन्यास की कथा संरचना'** विभाजन के दौरान हुई अमानवीयता और भयावह कथा को स्मरणीय रूप में दर्शाया गया है। कथा के हरेक पात्र के माध्यम से उनके चरित्र की व्याख्या की गई है। उपन्यास में प्रयुक्त की गई भाषा शैली के विविध पक्षों का जिक्र किया गया है।

तृतीय अध्याय **'काल और कला का अवतरण का आख्यान'** में उपन्यास का राजनीतिक, सामजिक एवं धार्मिक वातावरण के द्वारा विभाजन की प्रस्थितियों को परिभाषित किया गया है। उपन्यास में दर्शाए गए पात्रों के माध्यम से वहाँ का रहन-सहन, वेश-भूषा इत्यादि पर दर्शाए गए चित्र को किस रूप में फिल्मांकन किया गया है उसका चित्रण किया गया है। उपन्यास की कथा को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है उसी रूप को फिल्म में फिल्माया नहीं गया है। पात्रों के चरित्र में हेरा-फेरी की गई है। उपन्यास की कथा वस्तु एवं 'तमस' फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

बिना संभावनाओं के कोई शोध कार्य नहीं किया जाता उसमें गुणात्मक अंतर भले ही हो सकता है। मेरा शोध विषय समाजिक-विज्ञान, साहित्य और मानवमूल्यों के अंतरसंबंध पर आधारित है, जिसको लेकर अभी तक साहित्य में कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है, ऐसा कहना ठीक नहीं है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. एन. प्रसाद सर के प्रति अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने शोध-कार्य के प्रारंभ से लेकर संपन्न होने तक मुझे अनवरत मार्गदर्शन और सहयोग किया, जिससे यह शोध-कार्य अपने सही रूप में आ सका। विभागाध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही अपने विभाग के समस्त अध्यापकों को आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका सकारात्मक सहयोग मिला। मैं, सन्तोष कुमार मंडल, प्रेम कुमार और श्रीलेखा कुमारी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने कठिन प्रस्थितियों में भी अपना सकारात्मक सहयोग दिया।

मैं उन सभी अग्रज, कनिष्ठ, समकक्ष और अनुज का आभारी हूँ, जिनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला।